**सर्वेक्षण की झलकियां**

1. झारखंड में स्कूली शिक्षा प्रणाली शिक्षकों की कमी से जूझ रही है. नमूने या सैंपल में केवल 53 फीसद प्राइमरी स्कूलों और 19 फीसद अपर-प्राइमरी स्कूलों में शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत निर्धारित छात्र-शिक्षक अनुपात 30 से कम था.
2. सैंपल के 138 स्कूलों में से 20 फीसद में एक ही शिक्षक था. इनमें से ज्यादातर स्कूलों में एकमात्र शिक्षक पुरुष पारा शिक्षक है. इकलौते शिक्षक वाले स्कूलों में लगभग 90 फीसद विद्यार्थी दलित या आदिवासी बच्चे हैं.
3. प्राइमरी स्तर पर ज्यादातर शिक्षक (55 फीसद) पारा शिक्षक और अपर-प्राइमरी स्तर पर 37 फीसद पारा शिक्षक हैं. सैंपल में लगभग 40 फीसद प्राइमरी स्कूल पूरी तरह से पारा शिक्षक ही चला रहे हैं.
4. ज्यादातर स्कूलों के शिक्षकों का मानना है कि फरवरी 2022 में स्कूलों के फिर से खुलने तक ‘‘अधिकांश’’ छात्र पढ़ना-लिखना भूल गए थे.
5. सर्वेक्षण के दिन विद्यार्थियों की उपस्थिति (नामांकित बच्चों के मुकाबले उपस्थित बच्चे) प्राइमरी स्कूलों में केवल 68 फीसद और अपर-प्राइमरी स्कूलों में 58 फीसद थी.
6. सैंपल में शामिल एक भी स्कूल में कार्यात्मक शौचालय, बिजली और पानी की सुविधा नहीं थी.
7. सैंपल के दो-तिहाई प्राइमरी स्कूलों में चारदीवारी नहीं थी, 64 फीसद में खेल का मैदान नहीं था और 37 फीसद में लाइब्रेरी की किताबें नहीं थीं.
8. बातचीत करने वाले ज्यादातर शिक्षकों (दो-तिहाई) ने कहा कि सर्वेक्षण के समय स्कूल के पास मिडडे मील के लिए पर्याप्त पैसा नहीं है.
9. कई स्कूल (10 फीसद शिक्षक और ज्यादातर सर्वेक्षण टीमों के मुताबिक) अब भी हफ्ते में दो बार अंडे नहीं दे रहे हैं, जो तय किया गया था.
10. ज्यादातर सैंपल स्कूलों में, ‘‘फाउंडेशनल लिटरेसी ऐंड न्यूमरेसी’’ (एफएलएन) सामग्री बांटने को छोड़कर, उन बच्चों की मदद के लिए खास कुछ नहीं किया गया जो कोविड-19 संकट के दौरान पढ़ना-लिखना भूल गए थे.

(स्रोत: झारखंड के 16 जिलों के 138 प्राइमरी और अपर-प्राइमरी स्कूलों का जीवीएसजे सर्वेक्षण, सितंबर-अक्तूबर 2022. इन सैंपल स्कूलों को 26 सैंपल ब्लॉकों के भीतर बेतरतीब ढंग से चुना गया था. इन स्कूलों में कम से कम 50 फीसद विद्यार्थी अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति के हैं.)